संस्करण 9 : दिसम्बर-2013
आरोह फाउंडेशन द्वारा संचालित

पढ़ो और बढ़ो

कार्यक्रम एवं गतिविधियां
- गरीब और जरूरतमंद को बांटे कपड़े
- बच्चों ने धूम-धाम से मनाया क्रिसमस
- आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षण

सफलता की कहानी
- आसरा, आलोक व सविता देशपाल

सेन्टर फीचर
- संगम विहार, दक्षिणी दिल्ली

गेल-सीएसआर की एक पहल

पढो और बढ ़ ो ़गेल इंडिया-सीएसआर की एक पहल

गरीब आर जरूरतमंद का ै बांट े कपड े े़
जिनके पास खाने के लिए दो वä की रोटी और पहनने के लिए शरीर पर कपड़े ना हो तो उनके लिए जिंदगी के मायने क्या होते हैं यह सिर्फ उन्हें ही पता है। देश में ऐसे लाखों लोग है जो रोजाना बिना कुछ खाए रहते है। ऐसे लाखों लोग भी है जिन्हें तन ढ़कने के लिए कपड़े भी नहीं नसीब होते हैं। ऐसे ही गरीब और बेसहारा लोगों को सहारा देने के लिए गेल इंडिया और आरोह फाउंडेशन ने दिल्ली ए नसीआर की स्लम बस्तियों में संचालित पढ़ो और बढ़ों केन्द्र के आस-पास के गरीब और जरूरतमंदों लोगों को कपड़ा वितरित किया गया। पूर्वी दिल्ली, उत्तर पूर्वी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और गाजियाबाद जिले में कपड़ा वितरण समारोह आयोजित किया गया।

Events 1

बच्चां ने ध े म-धाम स ू े
मनाया क्रिसमस
दिल्ली एनसीआर के विभिन्न जिलों में संचालित पढ़ो और
बढ़ो केन्द्र पर क्रिसमस के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तर पूर्वी दिल्ली में नन्दनगरी स्थित अबनेर मेमोरियल चर्च में पढ़ो और बढ़ो के बच्चों ने क्रिसमस के अवसर पर प्रार्थना की और बच्चों को फादर सी.वी. वाल्सन द्वारा उपहार दिए गए। गाजियाबाद जिले में क्रिसमस के अवसर पर गरीब बच्चों को कपड़े बांटे गए और कार्यक्रम में बच्चों व शिक्षिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। पश्चिमी दिल्ली के अमन विहार केन्द्र पर बच्चों ने कार्यक्रम के दौरान सेंटा क्लाज के रूप आस-पास के बच्चों को टाफियां और बिस्किट वितरित किए। दक्षिणी दिल्ली में जवाहर पार्क स्थित नोडल ऑफिस पर बच्चों ने कार्यक्रम से पूर्व प्रार्थना की और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अन्त में बच्चों ने केक काटकर क्रिसमस की खुशी जाहिर की। पूर्वी दिल्ली में भी पढ़ो और बढ़ो के बच्चों ने सेंटा क्लाज का ड्रेस पहनकर कार्यक्रम में मौजूद लोगों को टॉफी और बिस्किट वितरित किए गये।

3

आत्मरक्षा क लिए े
प्रशिक्षण
पढ़ो और बढ़ो केन्द्र से जुड़ी युवतियों के अन्दर आत्मबल बढ़ाने के लिए दिल्ली पुलिस द्वारा आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पुरानी सीमापुरी स्थित बी ब्लॉक केन्द्र पर दिया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए दिया गया जिससे महिलाएं बेखौंफ रह सके व अपने उपर होने वाली किसी भी जोर जबर्दस्ती से खुद को बचा सके। 25 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक आयोजित इस आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम में पढ़ो और बढ़ो की शिक्षिका व समुदाय की महिलाएं ने हिस्सा लिया। महिलाओं को प्रशिक्षित करते हुए दिल्ली पुलिस की तरफ से आई प्रियंका कुमारी ने बताया कि- “दिल्ली पुलिस महिलाओं को हर संभव जागरूक करने

गरीब बच्चों को कपड़े वितरित करते हुए

क्रिसमस के अवसर पर कार्यक्रम प्रस्तुत करते पढ़ो और बढ़ो के बच्चे

की कोशिश कर रही है इसी के तहत दिल्ली पुलिस की
टीम विभिन्न जिलों में गैर-सरकारी संस्थाओं के सहयोग से महिलाओं को एक जगह पर इकट्ठा करके उन्हें आत्मरक्षा

दिल्ली पुलिस द्वारा आयोजित आत्मरक्षा की ट्रेनिंग लेती महिलाएं

का प्रशिक्षण दे रही है जिसमें उन्हें जुडो, कराटे सिखाए जा रहे हैं जो उनके मुश्किल वä में सहयोगी सिद्ध होगा।”

2

पढो और बढ ़ ो ़गेल इंडिया-सीएसआर की एक पहल

आसरा की उम्र 8 साल है। वह अपने
मां-बाप का बहुत ही आज्ञाकारी लड़की
है। रोजगार की तलाष में इसके पिता
अनिल बिहार से दिल्ली आ गए। घर-परिवार
का पेट भरने के लिए अनिल ने सब्जी की
दुकान खोल ली, आसरा भी अपने पिता
के साथ सब्जी की दुकान पर हाथ बंटाने
लगी। घर के हालात और आर्थिक तंगी ने
उसे स्कूल की दुनिया से दूर रखा लेकिन
उसके अन्दर पढ़ने की इच्छा अभी भी
बरकरार थी। दुकान पर पैसे के लेन देन
से उसका जोड़-घटाना अच्छा हो गया
था। लेकिन उसकी किस्मत उस समय
दस्तक दी जब वह आरोह फाउंडेषन की
कर्मचारी से मिली। आसरा को दुकान पर
काम करते देख पढ़ो और बढ़ो की षिक्षिका
ने उसके पिता से पढ़ो और बढ़ो के बारे में

Success Stories

बताया और अगले दिन उसका दाखिला
केन्द्र पर करवाया। जहां पर आज वह
पढ़ाई कर रही है उसके बारे में पढ़ो
और बढ़ो की षिक्षिका मोनिका कहती
है कि- “आसरा बहुत ही होनहार व
आज्ञाकारी लड़की है। अपनी कक्षा में
वह सबसे तेज है। अगर उसे सही
रास्ता दिखाया गया तो एक दिन वह
अपने मां-बाप का नाम रोषन करेगी।”
आसरा की ही तरह आज अपने देष के
लाखों बच्चे बचपन में किताबों की दुनिया
से दूर रहते हैं, अगर वä रहते इन
बच्चों को बालश्रम जैसे दलदल से नहीं
निकाला गया तो हकीकत में आसमां
में चमकने वाले ये तारे जमीं पर रह
जाएंगे।

एरिया प्राफाइल संगम े
विहार, दक्षिणी दिल्ली
दक्षिणी दिल्ली की मलिन बस्ती संगम विहार का इलाका, के-ब्लॉक। इसमें अमूमन 7000 लोग पॉलिथीन और छप्परों से बने मकान में रह कर अपना गुजर-बसर
करते हैं। यहां पर रहने वाले लोगों में अधिकतर लोग यू.पी., बिहार, बंगाल और चेन्नई जैसे प्रदेश से आए हुए हैं। यहां पर रहने वाली ज्यादातर आबादी मुस्लिम समुदाय से जुड़ी हुई है। सरकारी सुविधा के नाम पर
यहां से कुछ दूरी पर एक सरकारी स्कूल है, लेकिन लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने की बजाए काम करने के लिए भेजते हैं।

पुरूषों के पास रोजगार के श्रोत ना होने से महिलाएं ही कोठियों में साफ-सफाई करके परिवार का गुजर-बसर करती हैं। कुछ घरों में लोग अपने बच्चों को भी इस पेशे में लगा लिए हैं जिससे उनके द्वारा भी घर खर्च में हाथ बंटाया जा सके। रोजगार के अभाव में पुरूष वर्ग जुआ और शराब जैसी बुरी लत
को अपने जीवन के साथ जोड़ लिए हैं। ऐसे में वे लोग दिन भर जुआ खेलते हैं और रात में जुए से कमाए पैसे को शराब पर खर्च कर देते हैं। कुछ घरों के बच्चे सुबह होते ही हाथों में कूड़े की बोरिया लिए
खत्ते पर जाते हैं तो कुछ सड़कों की लालबत्तियों पर
भीख मांगते हैं।

कुछ अन्य सामाजिक संस्थाएं इनको जागरूक करने के लिए इलाके में काम करती है, लेकिन आर्थिक रूप
से लाचार ये लोग अगले दिन फिर से उसी पेशे को चुन लेते हैं। ऐसे में आरोह फाउंडेशन इनकी जरूरतों को देखते हुए इसका स्थाई विकल्प रखी है। आरोह फाउंडेशन उन बच्चों को जो कूड़ा बीनते हैं, भीख मांगते हैं और घरों में काम करते हैं ऐसे बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए पढ़ो और बढ़ो नाम से गेल इंडिया के सौजन्य से अनौपचारिक प्रशिक्षण केन्द्र चला रही है जिससे बच्चे यहां से निःशुल्क शिक्षा प्राप्त
करें और शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ सके।

Centre Feature

आसरा
लाभार्थी, पढ़ो और बढ़ो
पूर्वी दिल्ली

मन के हारे हार है और मन के जीते
जीत! जिंदगी सबके लिए आसान नहीं
होती या यूं कहें की जिंदगी किसी के
लिए भी आसान नहीं होती लेकिन जिसने
मन को जीत लिया समझो वो जी गया।
जिंदगी की आधी से ज्यादा कठिनाइयां
मन पैदा करता है। मुश्किलें हर किसी की
जिंदगी में आती और हर इंसान उन्हें
अलग-अलग तरीके से झेलता है, कोई
रोते हुए, कोई हंसते हुए, कोई जूझते हुए
तो कोई इंतजार करते हुए कि ये भी दिन
बीत जाएगें। ऐसी ही एक जूझती हुई
जिंदगी की कहानी है आलोक की।

हर समझदार बच्चे का एक सपना होता है
कि वो कुछ बनेगा और कुछ अच्छा काम
करेगा। इस बच्चे का सपना है फौजी
बनकर देश की सेवा करने का। आलोक
के पिता किसान हैं। उनका सपना था कि
मैं अगर देश की सेवा नहीं कर सका तो
मेरा बेटा देश की सेवा करके मेरा नाम
रोशन करें। लेकिन आलोक की जिंदगी में
पहला झटका लगा जब उसके पिता की
अचानक मौत हो गई। आलोक की मां
अपने बच्चे के सपने को पूरा करने के लिए
कानपुर से दिल्ली आ गई। आलोक की
मां एक एक्सपोर्ट कंपनी में नौकरी करके
अपने बच्चे का पेट भरती थी। लेकिन

उसके पास आलोक के जन्म का कोई
प्रमाणपत्र नहीं था जिस कारण वह
अपने बच्चे का दाखिला स्कूल में नहीं
करा सकती थी। एक दिन आलोक की
मां आरोह फाउंडेशन और गेल इंडिया
द्वारा संचालित पढ़ो और बढ़ो केन्द्र पर
आई और अपने परिवार की कहानी बयां
करके अपने बच्चे को स्कूल से जोड़ने
के लिए मिन्नतें करने लगी। पढ़ो और
बढ़ो की शिक्षिका पूजा वर्मा ने आलोक
का दाखिला पढ़ो और बढ़ो केन्द्र पर
किया जहां पर उसे एक साल तक
अनौपचारिक शिक्षा देकर उसके सभी
दस्तावेजों को स्थानीय कार्यलय से
बनवाकर नगर निगम प्राथमिक विद्यालय
में करवाया। आलोक अब दूसरी कक्षा
में पढ़ता है। आलोक की मां कहती है
“वह अपने पापा के सपने को पूरा करना
चाहता है इसलिए वह रोजाना स्कूल
जाता है और स्कूल से आने के बाद घर
पर बैठ कर पढ़ाई करता है। मुझे अपने
बच्चे को पढ़ते देख बहुत खुशी होती
है। मैं अरोह फाउंडेशन और गेल इंडिया
को दिल से धन्यवाद देती हूं कि जो
हमारे जैसे कितने गरीब लोगों के सपने
को साकार करने का नेक काम कर
रही है।”

आलोक
लाभार्थी, पढ़ो और बढ़ो
संगमविहार, दक्षिणी दिल्ली

सविता देशवाल
एजुकेटर, पढ़ो और बढ़ो
mÙkj if'peh fnYyh

पिता का सपना था बेटी भी बड़ी होकर
उनकी तरह देश की सेवा करे। इसलिए
पिता जी ने एयर फोर्स की अपनी सारी
कमाई बच्चों की पढ़ाई पर खर्च कर दी।
सविता अपने पिता के सपने को साकार
करने के लिए हर वä पढ़ाई करती रहती
थी। लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर
था कविता के पिता का अचानक देहान्त
हो गया और उसके सारे सपने धरे के धरे
रह गए। कठिन परिस्थितियों के बावजूद
सविता ने 12वीं की पढ़ाई पूरी की। सविता
इरादों की मजबूत लड़की थी पिता के
देहान्त के बाद उसकी शादी हो गई।
ससुराल में उसके पति और ससुर उसकी
योग्यता को समझते थे इस कारण वह
सविता को आगे पढ़ने की इजाजत दे
दिए। सविता ने घर पर रहकर और बच्चों
को ट्यूशन पढ़ाकर बी.काम. की पढ़ाई पूरी

की। पढ़ाई के साथ-साथ वह सरकारी
नौकरी के लिए तैयारी भी करती थी।
दिल्ली पुलिस की शारीरिक परीक्षा उत्तीर्ण
करने के बाद वह परिवारिक समस्याओं
के कारण लिखित परीक्षा में शामिल
नहीं हो सकी। इतनी विषम परिस्थितियों
को झेलने के बाद भी सविता ने अपने
हौंसलों को बुलंद रखा और पढ़ो और
बढ़ो केन्द्र पर शिक्षिका की नौकरी
करने लगी। सविता का मानना है कि
आज मैं भले ही सरकारी नौकरी नहीं
कर रही हूं लेकिन मैं अपनी नौकरी से
बहुत खुश हूं। मेरे पिता जी का सपना
था कि मैं देश की सेवा करुं, तो आज
मैं गरीब बच्चों को पढ़ाकर देश की सेवा
कर रही हूं। मैं अपनी नौकरी से बहुत
खुश हूं और मैं गेल इंडिया और आरोह
फाउंडेशन को धन्यवाद देती हूं।

PAB News

i<k vkj c<k dk;Øe d tfj, f'k{kk dh e[;/kkjk l tkM x, ykHkkfFk;k dh okLrfod fLFkfr dk fy;k x;k tk;tkA

fnYyh ,ulhvkj d Ldyk e nkf[ky cPpk dh gb tkpA

To Join us visit on **or mail us on www.arohfoundation@gmail.com**

PAB IN MEDIA

गरीबों को बांटे कंबल

साहिबाबाद। बढ़ती ठंड को देखते हुए शुक्रवार को श्याम पार्क में आरोह फाउंडेशन की ओर से गरीबों को कपड़े और कंबल बांटे गए। इस अवसर पर फाउंडेशन की अध्यक्ष डा. नीलम गुप्ता ने कहा कि ठंड को देखते हुए 50 लोगों को कंबल बांटे गए।

गरीबों को बांटे कंबल और कपड़े

गाजियाबाद, 29 दिसंबर। जिनके पास खाने के लिए दो वक्त की रोटी और पहनने के लिए शरीर पर कपड़े ना हो तो उनके लिए जिंदगी के मायने क्या होते है यह सिर्फ उन्हें ही पता है। देश में ऐसे लाखों लोग है जो रोजाना बिना कुछ खाए रहते है। ऐसे लाखों लोग भी है जिन्हें तन ढकने के लिए कपड़े भी नहीं नसीब होते है। ऐसे ही गरीब और बेसहारा लोगों को सहारा देने के लिए आरोह फाउंडेशन ने गेल के सौजन्य से श्याम पार्क स्थित पढ़ो और बढ़ो सेंटर पर गरीब और जरूरतमंदों को कंबल और कपड़े वितरित किए गए। आरोह फाउंडेशन का यही प्रयास रहता है कि गरीब और जरूरतमंद लोगों को हर वो चीज मुहैया करायें जिनकी उन्हें जरूरत होती है। इसी को देखते हुए श्याम पार्क गरीब बस्ती में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 50 लोगों को कंबल और कपड़े दिए गए। इस कार्यक्रम के जरिए लोगों को यह संदेश देना था कि ऐसे कितने गरीब लोग है जिन्हें आपके पुराने कपड़े नए जैसे लगते है। ऐसे ही लोगों को ठंड के मौसम में कंबल और कपड़े देकर उनकी जरूरतों को पूरा करना समाजहित में एक बहुत ही नेक काम है। वहां पर मौजूद लोग कंबल और कपड़े पाकर काफी खुश नजर आए।

GAIL

PAB is a CSR initiative of GAIL (India) Ltd, a Maharatna Central Public Sector Enterprise, incorporated in August 1984 under the Ministry of Petroleum & Natural Gas (MoP&NG).. GAIL has been actively initiating CSR activities, for carefully chosen social welfare programmes. Today, CSR & sustainability development is accorded high priority in the organizational ethos and attempted to be interwoven in all the business activities and the projects that are being undertaken by the company.

With its project Padho-Badho GAIL envisages to mainstream at least 50,000 under privileged children in government schools through its Non formal Education Centres for out-of-school children

PAB

Padho aur Badho is an initiative to prepare and mainstream out-of-school children into formal schools. It is one of the pioneering programmes being implemented by AROH, in association with GAIL- an intervention in the field of education, offering preparatory schooling and care to the out-of-school children, between 6-14 years of age. The project is being implemented in slums of Delhi/NCR. Since its inception in February 2010, till date Padho aur Badho has grown in scale and coverage – starting initially with 30 children in 2008, in one centre in NOIDA. Today there are 5 clusters of 50 centres each in NOIDA/East Delhi, Ghaziabad, South Delhi, West Delhi and North-East Delhi with a total of 7500 children enrolled in 250 centres.

AROH

AROH Foundation is an ISO 9001:2008 Certified, non-governmental, registered Society under Societies Registration Act XXI 1860, formed by a group of likeminded professionals and academicians from various segments of the Society. AROH aims to provide effective assistance to rural, weaker and poor communities, and especially women within these communities, by developing their life-skills, economic-skills and socio-cultural-skills, thereby creating model communities in which all are self-reliant.

AROH's overarching mission is to create an equitable society where all human beings coexist with dignity. For more than 12 years now, AROH Foundation has been, and continues to be involved in meaningful, empowerment-driven initiatives that distinctly impact the quality of life of the weaker sections of the society.

Published by AROH Foundation I F-52, Sector 8, NOIDA 201301 I www.aroh.in I arohfoundation@gmail.com I 0120-4328400-19